G. C. Pushp ... Tikamgarh (M.P.)
672

अतिशय क्षेत्र अहार के

प्राचीन शिलालेख

संग्राहक

पं० गोविन्ददास कोठिया, न्यायतीर्थ

प्रकाशक

सवाई सिंघई हीरालाल, दीपचंद, अनंदीलालजी जैन

हटा [टीकमगढ़]

प्रतियाँ १००० } पञ्चकल्याणकप्रतिष्ठा गजरथ महोत्सव फाल्गुन शुक्ला ५ रविवार सं० २०१४ { मूल्य चार आना

लेख--सम्वत् १२०२ चैत्रसुदी १३ गोलापूर्वान्वये नायक श्रीरतन तस्य सुत त्राल्ह-पोल्ह-सामदेव-भामदेव प्रणमन्ति नित्यम् ।

भावार्थ--गोलापूर्ववंशोत्पन्न नायक श्रीरतन उनके पुत्र त्राल्ह-पोल्ह-सामदेव-भामदेव संवत् १२०२ के चैत्र सुदी १३ को बिम्ब-प्रतिष्ठा कराके प्रतिदिन नमस्कार करते हैं ।

[नं० ३३]

मूर्तिका सिर्फ शिर नहीं है । बाकी सर्व आङ्गोपाङ्ग उपलब्ध हैं । चिह्न वगैरह कुछ नहीं है । करीब १॥॥ फुट ऊँची पद्मासन है । पाषाण काला है । पालिश चमकदार है ।

लेख--संवत् १२१० वैशाख सुदी १३ मेड़तवालवंशे साहु प्रयण-राम तत्सुत हरसू एतौ नित्यं प्रणमन्तः ।

भावार्थ--सं० १२१० वैशाख सुदी १३ को मेड़तवालवंशमें पैदा हुए साहु प्रयणराम उनके पुत्र हरसू ये दोनों बिम्बप्रतिष्ठा कराके प्रणाम करते हैं ।

[नं० ३४]

मूर्तिके दोनों तरफ इन्द्र खड़े हैं । घुटनों तक पैरोंके अतिरिक्त बाकी हिस्सा नहीं है । चिह्न दो हिरणोंका है । करीब ३ फुट ऊँचाई है । मूर्त्ति खड्गासन है । पाषाण काला है । पालिश चमकदार है ।

लेख--सम्वत् १२०६ गोलापूर्वान्वये साहु महिदीन तस्य पुत्र स्युपस्यु तथा अर्हमामक प्रणमन्तः ।

भावार्थ--गोलापूर्ववंशोत्पन्न साहु महिदीन उनके पुत्र स्युपस्यु, तथा अर्हमामक, संवत् १२०६ में प्रतिष्ठा कराके प्रणाम करते हैं ।

[नं० ३५]

मूर्त्तिका शिर नहीं है । बाकी सर्वाङ्ग सुन्दर है । चिह्न शेरका है । करीब १॥॥ फुट ऊँची है । पद्मासन है । पाषाण काला है । पालिश चमकदार है ।

लेख--संवत् १२१६ माहसुदी १३ श्रीमत्कुटकान्वये पण्डितलक्ष्मण-देवस्तस्य शिष्यार्यदेव आर्यिका लक्ष्मश्री तवेल्लिका चारित्रश्री तद्भ्राता लिम्बदेव एते श्रीमद्वर्द्धमानस्य बिम्बं अहिनिशि प्रणमन्ति ।

भावार्थ--संवत् १२१६ माघ सुदी १३ के शुभ दिनमें कुटक-वंशमें पैदा होनेवाले पण्डित लक्ष्मणदेव उनके शिष्य आर्यदेव तथा आर्यिका लक्ष्मश्री उनकी सहचरी चारित्रश्री उनके भाई लिम्बदेव श्रीवर्द्धमान भगवान्की प्रतिमाको प्रतिष्ठापित कराके प्रतिदिन नमस्कार करते हैं ।

[नं० ३६]

मूर्त्तिका आसन तथा कुहिनियों तक हाथ अवशिष्ट हैं । बाकी हिस्सा नहीं है । चिह्न सिंहका प्रतीत होता है । करीब २ फुट ऊँची पद्मासन है । पाषाण काला है । पालिश चमकदार है ।

लेख—सम्वत् १२२५ जेठ सुदी १५ गुरुदिने पंडितश्रीजसकीर्त्ति-शीलदिवाकरनीपद्मश्रीरतनश्री प्रणमन्ति नित्यम् ।

भावार्थ—संवत् १२२५ जेठ सुदी १५ गुरुवारको पण्डित श्रीयशकीर्त्ति तथा शीलदिवाकरनी पद्मश्री और रतनश्रीने बिम्ब-प्रतिष्ठा कराई ।

[नं० ३७]

आसन और आधे हाथोंके अतिरिक्त मूर्त्तिका बाकी हिस्सा खण्डित है । आसन चौड़ा और मनोहर है । चिह्न बैलका है । करीब दो फुटकी ऊँची पद्मासन है । पाषाण काला है । आसन टूट गया है और इसलिये लेख अधूरा है ।

लेख—सम्वत् १२१० वैशाखसुदी १३ गृहपत्यन्वये साहुसुलधस्य सुत ·····।

भावार्थ--संवत् १२१० के वैशाखसुदी १३ को गृहपति वंशोत्पन्न साहु सुलध उनके पुत्र·····ने प्रतिष्ठा कराई ।

[नं० ८४]

मूर्तिका सिर्फ एक टाँगको छोड़कर बाकी हिस्सा नहीं है। करीब ३ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है। पालिश चमकदार है।

लेख—सम्वत् १२१० वैशाख सुदी १३ गृहपत्यन्वये साहुकुलधर सुत.....

भावार्थ—गृहपति वंशमें पैदा होनेवाले शाह कुलधर उनके पुत्र.....ने संवत् १२१० के वैशाख सुदी १३ को इस प्रतिबिम्ब की प्रतिष्ठा कराई।

[नं० ८५]

मूर्तिका सिर्फ आसनका टुकड़ा उपलब्ध है। लेखमें सिर्फ संवत् पढ़ा जा सका। बाकी हिस्सा टूट गया है। पाषाण काला है।

लेख—सम्वत् १२२५.....।

भावार्थ—इस मूर्तिकी प्रतिष्ठा संवत् १२२५ में हुई।

[नं० ८६]

मूर्तिका शिर नहीं है। तथा धड़का दायाँ भाग नहीं है। अतः लेख आधा ही मिल पाया। करीब २ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला तथा पालिश चमकदार है। चिन्ह बैलका है।

लेख—संवत् १२०६ वैशाखसुदी १३.....।

पंडित विक्रमशिष्येन ठक्कुरददेसुतेन पद्मसिंहेण पुण्याय कारापितेयम्।

भावार्थ—पण्डित विक्रमके शिष्य ठक्कुर ददे उनके पुत्र पद्मसिंहने संवत् १२०६ के वैशाख सुदी १३ को प्रतिष्ठा कराई।

[नं० ८७]

मूर्तिका सिर नहीं है। आसन विशाल है। करीब ३ फुट ऊँची पद्मासन है। पाषाण काला है। पालिश चमकदार है। चिह्न नहीं है।

लेख—सं० १२०७ माघवदी ८ बाणपुरे गृहपत्यन्वये कोच्छल गोत्रे साहुरुद्र—तत्सुताः पाभ्भिण मोल्लाया तथा साहु माहवली रैमले पुत्र हरिषेण भ्भिणे-तत्सु कारापितेयं नित्यं प्रणमन्ति।

भावार्थ—बानपुरमें गृहपति वंशमें पैदा होनेवाले कोच्छल गोत्रमें शाह रुद्र उनके पुत्र पाभ्भिण मोल्लया और शाह माहवली रैमले पुत्र हरिषेण उनके पुत्र भ्भिणेने इस प्रतिबिम्बकी १२०७ के माघ वदी ८ को प्रतिष्ठा कराई।

[नं० ८८]

मूर्तिका तमाम हिस्सा टूट गया है। सिर्फ कुछ भाग बचा है। उसीसे कुछ लेख लिया गया है। मूर्तिकी अवगाहना करीब १॥ फुट रही होगी। पद्मासन है। काला पाषाण है। पालिश चमकदार है।

लेख—सं० १२१३ सिद्धान्तीदेवस्त्री सा.........

भावार्थः—मूर्तिके प्रतिष्ठापक सिद्धान्तीदेवश्री हैं। इन्होंने सं० १२१३ में बिम्ब प्रतिष्ठा कराई।

[नं० ८९]

यह लेख वेदिकासे लिया गया है। वेदिका देशी पाषाणकी बनाई गई है, जो कुछ पीला रुख लिये है। इसकी तीन कटनी हैं। हरएक कटनीमें कंगूरेदार काम है। ऊपरी हिस्सेमें जलधार का जल बाहर जानेके लिये टोंटी है। अनुमानतः अभिषेकके लिये ही वेदी बनाई गई थी।

(नीचे) लेख—सं० १२१३ आषाढ़ सुदी २ सोमदिन गृहपत्यन्वये कोच्छल्लगोत्रे बाणपुरवास्तव्य तद सुतमाहवा पुत्र हरिषेण उदइजलखूविंअदू प्रणमन्ति नित्यम्।

(ऊपर) लेख—हरषेण पुत्र हाडदेव पुत्र महीपाल गंसवसबचन्द्रलाहदेव माहिश्चन्द्र सहदेव एते प्रणमन्ति नित्यम्।